चंदा मामा दूर के
पुए पकाएं बूर के
आप खाएं थाली में
मुन्ने को दें प्याली में
प्याली गयी टूट
मुन्ना गया रूठ
मुन्ने को मनायेंगे
दूध मलाई खाएंगे
akhlesh.com

मछली जल की रानी है
जीवन उसका पानी है
हाथ लगाओ डर जाएगी
बाहर निकालो मर जाएगी
Akhlesh.com

गाड़ी आयी

छुक-छुक करती गाड़ी आई
आगे से हट जाना भाई
काला काला धुआँ उड़ाती
छुक-छुक छुक-छुक शोर मचाती
गाड़ी आयी गाड़ी आयी
आगे से हट जाना भाई

रेल चली

रेल चली भई रेल चली
छुक छुक छुक छुक रेल चली
लगता इसमें टिकट नहीं पर
जाती शहर और गली गली
जल्दी जल्दी बैठो भाई
कभी नही है देर भली

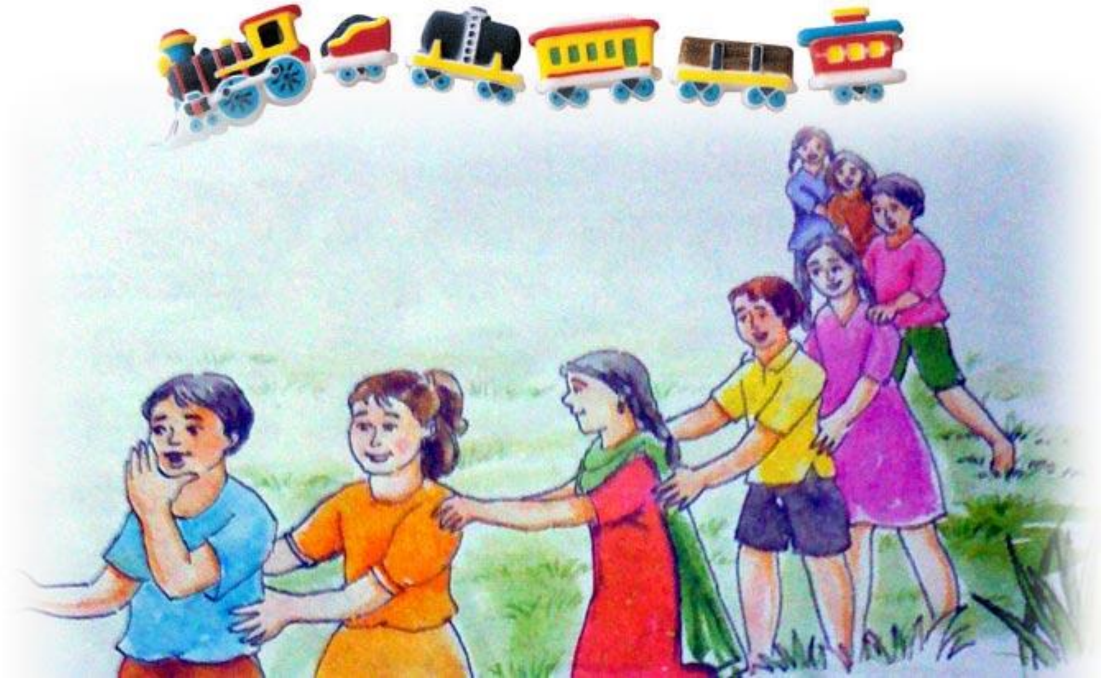

तितली

1 तितली रानी इतने सुंदर
पंख कहाँ से लाई हो ।

क्या तुम कोई शहज़ादी हो
परी लोक से आई हो ।

2 पंख अगर मिलते तितली के
दूर दूर उड़ जाती मैं ।

फूल फूल और कली कली पर
उड़ती और मंडराती मैं ।

akhlesh.com

मोर

नाच मोर का सबको भाता
जब वह पंखो को फैलाता

किहूँ किहूँ का शोर मचाता
घूम घूम कर नाच दिखाता

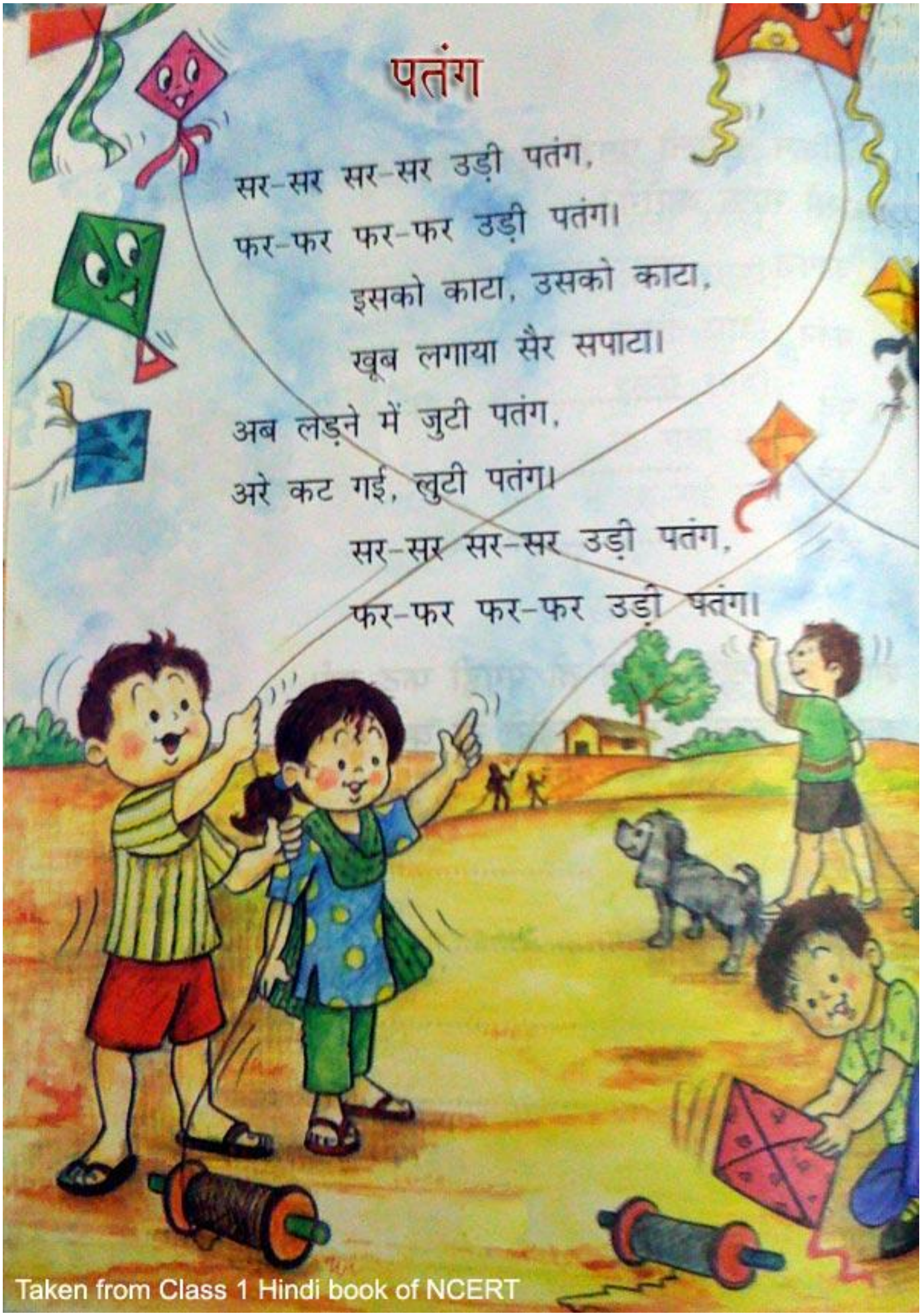

पतंग

सर-सर सर-सर उड़ी पतंग,
फर-फर फर-फर उड़ी पतंग।
इसको काटा, उसको काटा,
खूब लगाया सैर सपाटा।
अब लड़ने में जुटी पतंग,
अरे कट गई, लुटी पतंग।
सर-सर सर-सर उड़ी पतंग,
फर-फर फर-फर उड़ी पतंग।

Taken from Class 1 Hindi book of NCERT

पकौड़ी

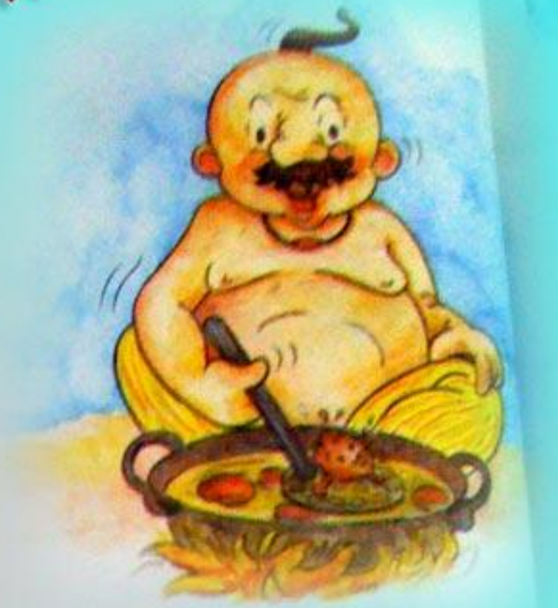

दौड़ी दौड़ी
आई पकौड़ी

छुन-छुन छुन-छुन
तेल में नाची
प्लेट में आ
शरमाई पकौड़ी

दौड़ी दौड़ी
आई पकौड़ी

हाथ से उछली
मुँह में पँहुची
पेट मे जा
घबराई पकौड़ी

दौड़ी दौड़ी
आई पकौड़ी

मेरे मन को
भाई पकौड़ी

akhlesh.com

मेरी बिल्ली काली पीली
पानी में वो हो गई गीली
गीली हो कर लगी काँपने
आ! छीं! आ! छीं! लगी छींकने
मैंने बोला कुछ तो सीख
बिना रुमाल के कभी न छींक

पत्तों का संसार

पेड़ों के कपड़े हैं पत्ते, पेड़ उन्ही को पहने रहते
पेड़ों के बस्ते में होते, खेल खिलौने सस्ते सस्ते
पत्तों का भी है संसार, पत्तों के हैं कई प्रकार
हर पत्ते का है आकार, केले बरगद और अनार

पत्तों को छूकर तो देखो, उनसे हाथ मिलाओ तुम
हँसी खेल में बातचीत में, उनको मित्र बनाओ तुम
अखबारों की तह के भीतर, उनको नींद सुलाओ तुम
अगर नींद से जाग उठें तो, गुन-गुन गीत सुनाओ तुम

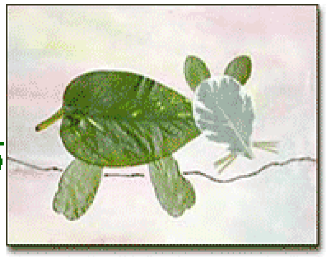

इन सूखे पत्तों से खेलो, मिलकर इन्हें सजाओ तुम
ये सारे दिलचस्प नमूने, कागज़ पर चिपकाओ तुम
पीपल पेट पूँछ डंडी की, पैर कनेर के इमली की नाक
हरी घास की लंबी मूँछ, कहीं बबूल कहीं पे ढाक

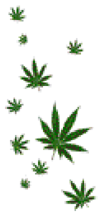

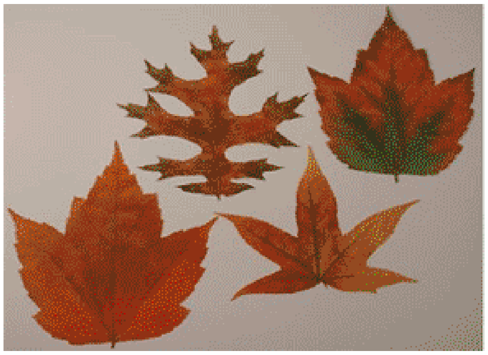

होते हैं बेजान न पत्ते, उनकी होती खास जुबान
कोई पत्ता लगता चेहरा, कोई है चोटी की शान
पेड़ो के पत्तों से बच्चों, बनता सुंदर चिड़ियाघर
सैर करो तुम आज उसी की, जल्दी आओ करो सफर

Written by Arvind gupta

akhlesh.com

कोयल

कोयल गीत सुनती है
सबके मन को भाती है
ऋतु बसंत जब आती है
हरियाली तब छाती है
तब यह धूम मचाती है
बगिया में यह जाती है
डाल डाल पर गाती है
सबके दिल को भाती है

akhlesh.com

तितली और कली

हरी डाल पर लगी हुई थी
नन्ही सुन्दर एक कली
तितली उससे आकर बोली
तुम लगती हो बड़ी भली

अब जागो तुम आँखे खोलो
और हमारे संग खेलो
फैले सुंदर महक तुम्हारी
महके सारी गली गली ।

कली छिटक कर खिली रंगीली
तुरंत खेल की सुनकर बात
साथ हवा के लगी भागने
तितली छूने उसे चली

akhlesh.com

होली

1 रंगों का त्योहार है होली
फागुन का सिंगार
झूमें नाचें मस्ती काटें
डाल गले बाँहों के हार

2 कैसे मजे की होली आई
चारों ओर खुशी है छाई
नाचें गाएँ कूदें भाई
सबके दिल में खुशी समाई

छोटी सी मोटर के अंदर
आ बैठे ये भालू बन्दर
कहते मोटर तेज चलाओ
हमको ठंडी हवा खिलाओ

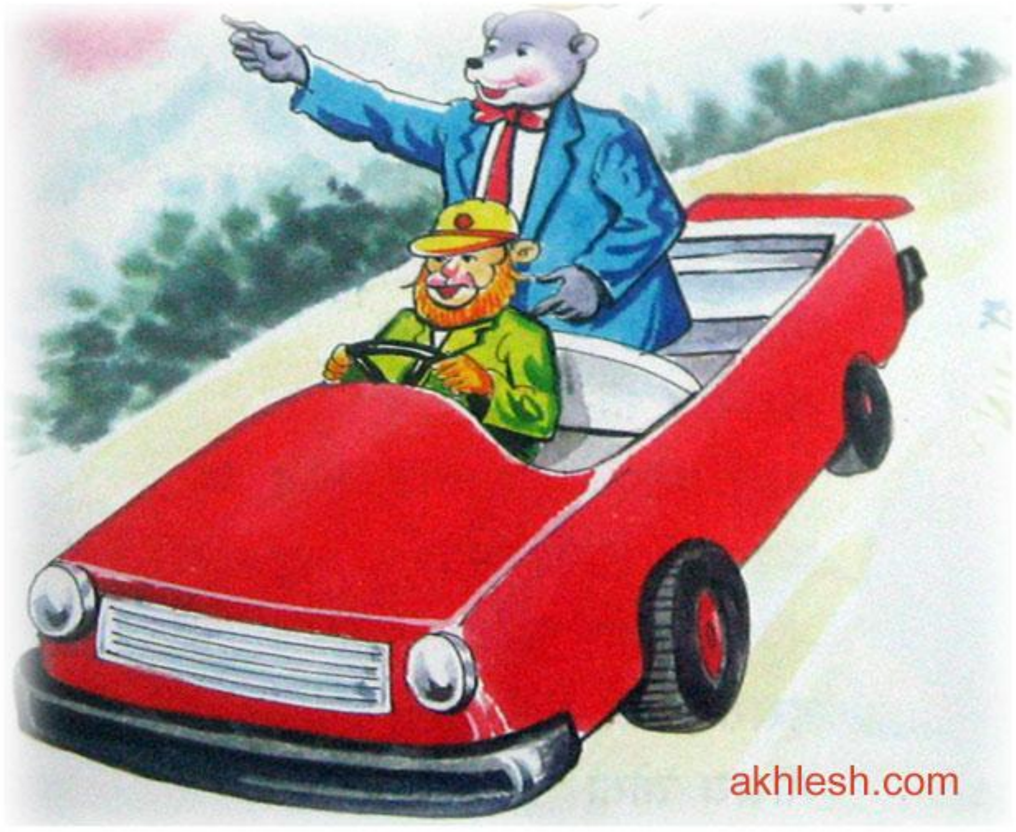

पुराने बच्चे

हम पहली के बच्चे हैं
अधरे पक्के कच्चे हैं।

एक साल हो गया हमें
इस विद्यालय में आए
पिछले पूरे साल में हमने
कितने मज़े उड़ाए।

रंग बिरंगे कागज काटे
काट काट चिपकाए
खेले कूदे पढ़े लिखे
और ढेरों गाने गाए।

पूरी छोले इडली सांभर
क्या क्या माल उड़ाए
घर जा कर अपने स्कूल के
किस्से खूब सुनाए।

आने वाले साल में भी हम
मिलकर मौज उड़ाएँगे
नई नई चीज़ें सीखेंगे
बढ़िया गाने गाएंगे।

तुम सब जो इस साल आए हो
साथ हमारे खेलोगे
साथ साथ गाने गाओगे
संग संग झूले झूलोगे।

धीरे धीरे साथ साथ हम
ऊपर चढते जाएंगे
नए नए बच्चों को ऐसे
गाने सदा सुनाएंगे।

akhlesh.com

आलू बोला मुझको खालो   मैं तुमको मोटा कर दूंगा

पालक बोली मुझको खालो   मैं तुमको ताकत दे दूँगी

साथ में मूली गाजर बोले   अगर हमें भी खाओगे

तो खूब बड़े हो जाओगे

akhlesh.com

ये देश है वीर जवानों का

ये देश है वीर जवानों का
अलबेलों का, मस्तानों का
इस देश का यारों क्या कहना
यह देश है दुनिया का गहना।

यहाँ चौड़ी छाती वीरों की
यहाँ भोली शक्लें हीरों की
यहाँ गाते हैं राँझे मस्ती में
मचती है धूमें बस्ती में

पेड़ों पे बहारें झूलों की
राहों में कतारें फूलों की
यहाँ हँसता है सावन बालों में
खिलती हैं कलियाँ गालों में

कहीं दंगल शोख जवानों के
कहीं करतब तीर-कमानों के
यहाँ नित-नित मेले सजते हैं
नित ढोल और ताशे बजते हैं

दिलबर के लिए दिलदार हैं हम
दुश्मन के लिए तलवार हैं हम
मैदाँ में अगर हम डट जाएँ
मुश्किल है कि पीछे हट जाएँ
ये देश है वीर ...

akhlesh.com

सूरज

पूरब का दरवाज़ा खोल धीरे धीरे सूरज गोल
लाल रंग बिखराता है ऐसे सूरज आता है

गाती हैं चिड़ियॅा सारी खिलती हैं कलियाँ प्यारी
दिन सीढ़ी पर चढ़ता है ऐसे सूरज बढ़ता है

गरमी कम हो जाती है धूप थकी सी आती है
सूरज आगे चलता है ऐसे सूरज ढलता है

धरती को महकाएँ

बगिया के फूलों को देखो,
कैसे खुश-खुश रहते हैं!
आँधी हो, पानी हो चाहे,
सबको हँस-हँस सहते हैं।

सूरज की किरणों को देखो,
रोज धरती पर आती हैं।
अंधकार को दूर भगाकर,
सारा जग चमकाती हैं।

दीपक को देखो कैसे यह,
हरदम जलता रहता है!
अपना अंतर जला-जलाकर,
रोशन जग को करता है।

आओ हम भी इंसा बनकर,
जग में अपना नाम कमाएँ।
अच्छे-सच्चे काम करें और,
इस धरती को महकाएँ।

akhlesh.com

चँदा मामा गोल है
मम्मी की बिंदी गोल है
मम्मी की रोटी गोल है
पापा के पैसे गोल हैं
दादा जी का चश्मा गोल है
दादी जी के लड्डू गोल है
साइकिल का पहिया गोल है
सारी दुनिया गोल है
akhlesh.com

छोटी सी हूँ लेकिन फिर भी बड़े काम की मानी जाती
सदा समय की पाबंदी में रखना सबको हूँ सिखलाती

कभी जेब में पड़ी ठुमकती कभी कलाई पर बंध जाती
कभी मेज़ पर बैठ ठाठ से टिक टिक टिक टिक राग सुनाती

छोटी हूँ पर घंटाघर के ऊपर होती बहुत बड़ी हूँ
सोच रहे होगे – मैं क्या हूँ मैं तो केवल एक घड़ी हूँ

akhlesh.com

हाथी

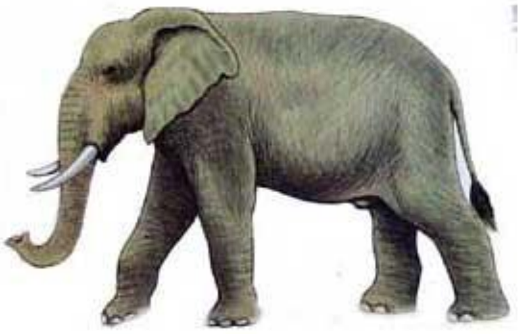

धम्मक धम्मक आता हाथी
धम्मक धम्मक जाता हाथी
जब पानी में जाता हाथी
भर भर सूँड़ नहाता हाथी
कितने केले खाता हाथी
यह तो नहीं बताता हाथी
धम्मक धम्मक आता हाथी
धम्मक धम्मक जाता हाथी